य जगदम्बा जय नर्मदा भवानी,

निकली जलधार जोर पर्वत पताल फोर ।

छटा छवि आनन्द वरन कवि सुर फनिन्द,

काटत जग द्वन्द्व फन्द देत रजधानी ।

भूषणवस्त्र शुभ विशाल चन्दन की खोर,

भाल मनो राव पर्वकाल तेज ओ बखानी ।

देत मुक्ति परमधाम गावत जो आठोंयाम,

दुविधा जात महाकाम ध्यावत जो प्राणी ।

ध्यावत आज सुर सुरेश पावत नहीं पार,

गावत नारद गणेश पण्डित मुनि ज्ञानी ।

संयम सागर मंझधार में जल उदधि अहंकारी,

उदरफार निकारधार ऊपर नित छहरानी ।

अष्ट भुजो बाल अखण्ड नव द्वीप,

नौ खण्ड महिमा मात तुम जानी ।

देके दर्शन प्रसाद रखो माता मर्यादा ।

दास गँव करे आरती वेद मति बखानी ॥

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in